अनुवाद – विज्ञान

विषय	हिन्दी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	P1 भाषा–विज्ञान
इकाई सं. एवं शीर्षक	M1 अनुवाद–विज्ञान
इकाई टैग	HINDI – P1 M1 [CC-8 SEC-2-IV SEM-HONS]
प्रधान निरीक्षक	डॉ० कुसुम राय
प्रश्नपत्र –संयोजक	डॉ० पूनम शर्मा
इकाई –लेखक	डॉ० पूनम शर्मा
इकाई– समीक्षक	डॉ० कुसुम राय
भाषा – सम्पादक	डॉ० पूनम शर्मा

पाठ का प्रारूपः

इकाई 1. पाठ का उद्देश्य

इकाई 2. प्रस्तावना

इकाई 3. अनुवाद का अर्थ, परिभाषा

इकाई 4. अनुवाद का स्वरूप और क्षेत्र

इकाई 5. अनुवाद की प्रकृति और प्रकार

पाठ का उद्देश्यः

1) विद्यार्थी इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् सक्षम होगा।
2) अनुवाद के महत्व से परिचित होगा।
3) विद्यार्थियों में विचार –विनिमय की योग्यता उत्पन्न करना।
4) विद्यार्थियों में दूसरी भाषा के साहित्य से अपनी भाषा के साहित्य को समृद्ध करना।
5) भाषाओं की शैलियें, मुहावरें, छंदें, दार्शनिक तथ्यें, वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारें आदि का ज्ञान कराना।

प्रस्तावनाः

अनुवाद का सामान्य अर्थ व्याख्या या विश्लेषण हैं। इसका अर्थ पूर्व कथित बात का विश्लेषण या उल्लेख का एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण करना माना जाता हैं। प्रस्तुत इकाई में अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति एवं उसके महत्व और प्रकारें पर प्रकाश डाला जाएगा। अनुवाद को ''एक सांस्कृतिक सेतु'' की संज्ञा भी प्राप्त हुई है। इसे एक ऐसी तकनीक माना गया है 'जिसका अविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडंबनाओं से बचने के लिए किया था''। अनुवाद अभिव्यक्ति के भिन्न– भिन्न भाषिक माध्यमें में एकता और मानव– चेतना के अद्वैत का उद्घाटन करता है। ऐतिहासिक, भैागोलिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि कारणें से उत्पन्न हुई भिन्नताओं की तह में मानव चेतना की जो नैसर्गिक एकता अंतर्निहित होती है, अनुवाद उसे ही प्रकाशित करता है। तात्पर्य यह कहें कि अनुवाद भाषागत विविधता में एकता का सूत्र स्थापित करता हैं, एक भाषा में लेखबद्ध विचारों और भावों को अन्य भाषा में सुलभ कराता है।

अनुवाद का अर्थ, परिभाषाः

1) अनुवाद शब्द संस्कृत के 'वद्' धातु से बना है।
2) अनुवाद का तात्पर्य है बोलना, बात करना।
3) 'वद्' धातु में 'घञ' प्रत्यय जुड़ने से 'वाद' शब्द बनता है।
4) 'अनु' उपसर्ग में 'वाद' प्रत्यय लगने से अनुवाद शब्द बना है।
5) अनुवाद का मूल अर्थ है ''किसी के कहने के पश्चात् कहना'' अथवा पुनः कथन।
6) अनुवाद शब्द का प्रयोग संस्कृत के आचार्य पाणिनि के ''अष्टाध्यायी'' में मिलता है।

कोश के अनुसार अनुवाद का अर्थ है–'' पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना''

अनुवाद का कार्यः एक स्रोत भाषा में अभिव्यक्त विचारों को किसी दूसरी अर्थात लक्ष्य भाषा में व्यक्त करना होता है। किसी एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित कर देना ही अनुवाद होता है।

परिभाषाः

1) ए० एच० स्मिथ के अनुसारः

''अर्थ को बनाये रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण कहना अनुवाद है।''

2) डॉ. स्टर्ट के अनुसारः

''अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बंध प्रतीकों के एक सुनिश्चित समुच्चय के अर्थ के अन्तरण से है।''

3) जे० सी० कैटफर्ड के अनुसारः

''अनुवाद एक भाषा के पाठ परक उपादानों का दूसरी भाषा के पाठ परक उपादानों के रूप में समतुल्यता के आधार प्रतिस्थापना है''।

"The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language".

4) न्यूमार्क के अनुसारः

''अनुवाद एक शिल्प है जिसमें एक भाषा में लिखित संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है''।

अनुवाद का स्वरूप : भाषाविद् नायडा के अनुसार अनुवाद के तीन स्वरूप है।

1. शाब्दिक अनुवाद
2. भावानुवाद
3. पर्याय के आधार पर अनुवाद

1. <u>शाब्दिक अनुवादः</u> शाब्दिक अनुवादः में मूल पाठ में आए सभी शब्दों का अनुवाद किया जाता है। शाब्दिक अनुवाद वाक्य के स्तर पर होने वाला अनुवाद है।इस अनुवाद में मूल पाठ के एक–एक शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य सभी का अनुवाद किया जाता है। प्रायः यहाँ यह माना जाता है कि अनुवाद करते समय

अनुवादक मूल पाठ में किसी भी अंश को न तो छोड़ा और न अपनी ओर से कोई नया शबद जोड़े। निम्न जगहों पर शाब्दिक अनुवाद का प्रयोग किया जाता है:

I. सूचना प्रधान साहित्य
II. वैज्ञानिक एंव
III. तकनीकी साहित्य

2. भावानुवादः भावानुवाद वस्तुतः शाब्दिक अनुवाद की विपरीत विधा है। भावानुवाद में मूल कृति की वाक्य रचनाओं पर ध्यान न दिया जाकर उसके मूल भाव को ग्रहण करने का प्रयास किया जाता है।

3. पर्याय के आधार पर अनुवादः जिस प्रकार वाक्य किसी अनुच्छेद का सहज अंग होता है,उसी प्रकार वाक्य में भी प्रत्येक शब्द का महत्व उसमें निहित अर्थ से है। अनुवादक के पास भी अपनी भाषा में पर्याप्त पर्याय शब्द हो सकते हैं। जिनमें से छॅाटकर वह उपयुक्त शब्द रखने का प्रयास करता है। अनुवादक के पास भी अपनी भाषा में पर्याप्त शब्द हो सकते है जिनमें से उसे चुनाव करना होता है।

अनुवाद का क्षेत्रः

आज विश्व की बदलती हुई परिस्थितियों में अनुवाद का महत्व दिन–प्रतिदिन बढता जा रहा है। वस्तुतः अब 'विश्व एक इकाई' हो गया है। ऐसी स्थिति में यह जानने की आवश्यकता होती है कि किसने क्या कहा, किसने क्या लिखा? अनुवाद के द्वारा अन्य भाषाओं के साहित्य से तो परिचित होते ही है, अन्य देशों के विचार, अनुसंधान–कार्य, राजनीतिक हलचल, सामाजिक–सांस्कृतिक विचारघाराएँ भी प्राप्त होती है। आवश्यकता है कि विश्व की सभी भाषाओं के जानकार हमारे देश में हो जिससे जब जिस भाषा से अनुवाद की आवश्यकता हो, करवाया जा सके। दूर–दूर सीमाओं में बॅटी मानव–जाति अनुवाद के माध्यम से समीप आती है।अनुवादक प्राचीन और नए के बीच कड़ी स्थापित करता है।

साहित्य के विभन्न क्षेत्रों में अनुवाद की निम्नलिखित आवश्यकता बढती जा रही है: –

1. दूसरे देशों द्वारा किया गया शोधकार्य,
2. भारतीय तथा प्रमुख–प्रमुख देशों के साहित्य की जानकारी,
3. विधि/न्याय संबंधी निर्णयों की जानकारी,
4. व्यापारिक क्षेत्र में आदान–प्रदान,

5. विश्व की प्रमुख संस्कृतियों का परिचय,
6. कार्यालयी द्विभाषिकता,
7. पर्यटन–देश तथा विदेश के संदर्भ में,
8. विश्व की श्रेष्ठ कृतियों का ज्ञान,
9. अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन,
10. सामान्य ज्ञान, विश्व के विविध देशों में परस्पर वैचारिक स्तर पर आदान–प्रदान।

अनुवाद की प्रकृतिः

अनुवाद की प्रकृति के बारे में प्रायः यह प्रश्न उठता है कि यह कला है या विज्ञान या शिल्प या इन तीनों की मिश्रित विधा। वस्तुतः अनुवाद एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है, जिसमें एक ओर इसके दोहरे संप्रेषण–व्यापार का संदर्भ मिलता है तो दूसरी ओर इसके क्रिया–व्यापार की दोहरी भूमिका दिखाई देती है। इसी प्रकार अनुवाद–सामग्री के रूप में हमें एक ओर सर्जनात्मक व्यापार की अलौकिक साहित्यक रचना मिलती है तो दूसरी ओर तर्क–चिंतन के कार्य–कारण संबंधों पर आधारित वैज्ञानिक पाठ प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, वर्तमान युग में प्रशासन, वाणिज्य–व्यापार, जनसंचार आदि के कार्यकलापों के अदान–प्रदान से सूचनापरक सामग्री उपलब्ध होती है। इन सभी तथ्यों से अनुवाद को व्यापक आधार मिला है, इसलिए अनुवाद की प्रकृति के बारे में विभन्न विचारधारओं का उभरना स्वाभाविक है।

अनुवाद को कला मानने वाले विद्वानों के मतानुसार अनुवाद एक सर्जनात्मक प्रक्रिया है। जिसमें अनुवादक अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से अनूदित पाठ को नया रूप प्रदान करता है और एक ही विषय को विभन्न शैलियों में सॅजोता और सॅवारता है।

अनुवाद को शिल्प या कौशल मानने वाले विद्वानों के मतानुसार अनुवादक तो अनुवादक होता है, न कि सर्जक , साहित्यकार या तर्कप्रवण वैज्ञानिक। किसी भी द्विभाषिक को पर्याप्त प्रशिक्षण और अभ्यास द्वारा अनुवादक बनाया जा सकता है जबकि कला और विज्ञान का आधार मात्र प्रशिक्षण नहीं है।

उपयुक्त विवेचन का निष्कर्ष यह है कि अनुवाद पारिभाषिक अर्थ में न विज्ञान है और न कला।शिल्प भी कहना तर्कसंगत नहीं होगा। वास्तविक स्थिति यह है की अनुवाद में इन तीनों तत्वों का यथानुपात समावेश रहता है। इस प्रकार अनुवाद एक स्वतंत्र विधा है।

अनुवाद के प्रकारः–

अनुवाद के प्रकारों को मुख्य चार आधार माने जा सकते हैः

1. गद्य–पद्य के अधार परः

(क) गद्यानुवादः यह अनुवाद गद्य में होता है या किया जाता है। गद्य का ही गद्य में अनुवाद किया जाता है।

(ख) पद्यानुवादः यह अनुवाद पद्य में होता है। पद्य का ही पद्य में अनुवाद किया जाता है।

(ग) मुक्त छंदानुवादः यह अनुवाद मुक्त छंद में किया जाता है।

2. साहित्यिक विधा के आधार पर :

(क) काव्यानुवादः काव्य–रचना का अनुवाद काव्यानुवाद कहलाता है।

(ख) नाटकानुवादः नाटक का किसी दूसरी भाषा के नाटक में अनुवाद नाटकानुवाद होता है।

(ग) कथानुवादः किसी कथा–साहित्य अर्थात उपन्यास अथवा कहानी का अन्य कथा–साहित्य में जो अनुवाद किया जाता है।

3. विषय के आधार पर :

(क) पत्रकारिता अनुवाद
(ख) विधि साहित्य अनुवाद
(ग) वैज्ञानिक साहित्य अनुवाद
(घ) धार्मिक साहित्य अनुवाद
(ड़) ललित साहित्य अनुवाद
(च) कार्यालयीन अनुवाद
(छ) गणित साहित्य अनुवाद
(ज) ऐतिहासिक साहित्य अनुवाद
(झ) तकनीकी अनुवाद

4. अनुवाद प्रकृति के अधार पर :

(क) मूलनिष्ठ अनुवादः यह अनुवाद मूल पाठ या विषय–वस्तु का अनुगमन करता है।
(ख) मूलमुक्त अनुवादः इस प्रकार के अनुवाद के अनुवादक को काफी छूट होती है। परन्तु विचारों, भावों अथवा कथ्य तबदीली की छूट न होकर अभिव्यक्ति शैली की होती है।
(ग) शब्दानुवादः इस प्रकार के अनुवाद में मूल पाठ का शब्द_अनुवाद किया जाता है।

(घ) भावानुवादः इस प्रकार के अनुवाद में मूल पाठ के अर्थ, विचार तथा भावों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

(ड़) छायानुवादः छायानुवाद प्रायः शब्दानुवाद की तरह मूल पाठ के शब्दों का अनुसरण न करके उसके भावों, विचारों आदि की छाया मात्र लेकर चलता है।

(च) सारानुवादः लम्बे मूल पाठ, भाषण या सम्भषण आदि का संक्षिप्त रूप में जो अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है,उसे सारानुवाद कहते है।

(छ) व्याख्यानुवादः मूल पाठ का व्याख्या के साथ जो अनुवाद किया जाता है,उसे व्याख्यानुवाद कहा जाता है।

(ज) वार्तानुवादः इसे आशु अनुवाद भी कहा जाता है। दो भिन्न भाषा–भाषी के बीच दुभाषियों के रूप में अनुवादक जो अनुवाद करता है, उसे वार्तानुवाद कहते है।

निष्कर्षः

इस प्रकार अनुवादक पाठक के रूप में अर्थग्रहण करता है, द्विभाषिक के रूप में अर्थातंरण और लेखक के रूप में अर्थ–संप्रेषण करता है और कथ्यवस्तु को बिना कोई परिवर्तन किए बनाए रखने का प्रयास करता है।

हर भाषिक प्रक्रिया का अध्ययन भाषाविज्ञान के अंतर्गत आता है। अनुवाद भी एक भाषिक प्रक्रिया है, जिसमें भाषावैज्ञानिक सिद्धांतों और नियमों के अनुप्रयोग के साथ–साथ बोधन की प्रक्रिया शब्द की तकनीक और लक्ष्यभाषा में उसके प्रस्तुतीकरण को भी देखा जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में जो अनुवाद चिंतन हो रहा है, उससे अनुवाद सिद्धांत अपेक्षाकृत नए ज्ञानक्षेत्र और स्वायत्त विषय के रूप में उभरा है। यह ज्ञानक्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि इसमें सैद्धांतिक संदर्भ के साथ–साथ व्यावहारिक संदर्भ के आयामों में भी विस्तार आ गया है। अब यह शास्त्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर वैज्ञानिक रूप धारण कर रहा है, इसलिए अनुवाद को विज्ञान की संज्ञा दी जा रही है।